1. पंचांग

पंचांग शुद्धि के अन्तर्गत तिथि, वार, नक्षत्र, योग और करण की शुद्धि को ही पंचांग शुद्धि कहा जाता है, जिसमें इनके नैसर्गिक स्वभाव के आधार पर कार्य के अनुरूप मुहूर्त की गणना की जाती है। यदि किसी विशेष कार्य को आरंभ करने के लिए पांचों तत्वों की नैसर्गिक अनुमति प्राप्त हो तो वह दिन विशेष कार्य करने के लिए श्रेष्ठ, चार की हो तो उत्तम, तीन की हो तो मध्यम, दो या एक की शुभता मिले तो निम्न होता है, और यदि कार्य के अनुरूप पांचों में से एक भी न हो तो त्याज्य मानना चाहिए। आपातकाल में उपायों का प्रयोग करके कार्य किया जा सकता है।

तिथि

चन्द्रमा के भोगांश [longitude of moon] से सूर्य का भोगांश [longitude of sun] घटाने पर प्राप्त अंशो को 12° से भाग करने पर जो भागफल प्राप्त होता है उसे तिथि कहते हैं। जब चन्द्रमा और सूर्य एक ही राशि और एक ही अंश पर हों अर्थात् दोनो के अंशों का अन्तर शून्य हो तो अमावस्या तिथि होती है। यदि दोनो का अंतर 180° हो तो पूर्णिमा तिथि होती है। कुल तिथियां 30 होती हैं। 15 तिथियां शुक्ल पक्ष की और 15 तिथियां कृष्ण पक्ष की होती हैं।

	शुक्लपक्ष	कृष्णपक्ष
अशुभ तिथियां	1,2,3,4,5	11,12,13,14,30
मध्यम (न शुभ न अशुभ) तिथियां	6,7,8,9,10	6,7,8,9,10
शुभ तिथियां	11,12,13,14,15	1,2,3,4,5

शुद्ध तिथिः- वे तिथियां जो एक ही सूर्योदय को छू पाती हैं, शुद्ध तिथि कहलाती हैं।

क्षय तिथिः- वे तिथियां जो एक भी सूर्योदय को नही छू पाती हैं, क्षय तिथि कहलाती हैं।

वृद्धि तिथिः- वे तिथियां जो दो सूर्योदय को छू पाती हैं, वृद्धि तिथि कहलाती हैं।

दोनों पक्षों की तिथियां, उनके स्वामी और उनका नैसर्गिक स्वभाव आदि निम्न प्रकार से हैंः-

क्रम संख्या	दोनो पक्षों की तिथियां	तिथियों के स्वामी	तिथियों के नैसर्गिक स्वभाव	त्याज्य कार्य
1	प्रतिपदा (1)	अग्नि	वृद्धिप्रद	काष्टसंचय
2	द्वितीया (2)	ब्रह्मा	मंगलप्रद	उबटन प्रयोग
3	तृतीया (3)	पार्वती (गौरी)	बलाप्रद	
4	चतुर्थी (4)	गणेश	खलप्रद	
5	पंचमी (5)	नाग (सर्प)	लक्ष्मीप्रद	
6	षष्ठी (6)	स्कन्द (स्वामी कार्तिकेय)	यशप्रद	काष्टसंचय, तेल प्रयोग
7	सप्तमी (7)	सूर्य	मित्रप्रद	आंवला स्नान
8	अष्टमी (8)	शिव	द्वन्दप्रद	मांस भक्षण
9	नवमी (9)	दुर्गा	उग्रप्रद	आंवला स्नान
10	दशमी (10)	यमराज	सौम्यप्रद	उबटन प्रयोग
11	एकादशी (11)	विश्वेदेवा	आनन्दप्रद	उपनयन संस्कार

12	द्वादशी (12)	विष्णु (हरि)	यशप्रद	
13	त्रयोदशी (13)	कामदेव	जयप्रद	उबटन प्रयोग
14	चतुर्दशी (14)	शिव	उग्रप्रद	क्षौरकर्म (बाल कटवाना)
15	पूर्णिमा (15)	चन्द्रमा	सौम्यप्रद	
30	अमावस्या (30)	पितर	मित्रप्रद	काष्टसंचय, आंवला स्नान, मैथुन

नोटः-

परिहारः- षष्ठी शनैश्चरे तैलं, महाष्टम्यां पलानिच।

तीर्थक्षौरं चतुर्दशयां, दीपमाल्यां च मैथुनम्।।

अर्थात्ः- षष्ठी तिथि शनिवार के दिन हो तो तेल का प्रयोग, दुर्गामहाष्टमी के दिन मांस भक्षण, चतुर्दशी के दिन तीर्थ में क्षौर कर्म (बाल कटवाना) और दीपावली की रात्रि मैथुन निषेध नही है।

कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा शुभ और शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा अशुभ होती है।

रविवार के दिन यदि नवमी (दोनो पक्षों की) तिथि हो तो भी काष्ट संचय न करें।

सभी तिथियों को उनके नैसर्गिक गुणों के आधार पर विभाजित किया गया है जैसेः- **नन्दा तिथियां** (1,6,11) सभी प्रकार की शिक्षा आरंभ करने के लिए शुभ, **भद्रा तिथियां** (2,7,12), 16 संस्कारों के लिए शुभ, **जया तिथियां** (3,8,13) नई दवा शुरू करना, गृहस्थ प्रयोग के लिए नई वस्तु खरीदना, शत्रु पर आक्रमण करना और शस्त्र विद्या का आरंभ करने के लिए शुभ, **रिक्ता तिथियां** (4,9,14) ऑपरेशन

करवाने के लिए शुभ और **पूर्णा तिथियां** (5,10,15) सभी प्रकार के कार्य के लिए शुभ, अमावस्या (30) पूजा-पाठ और दान आदि के लिए शुभ है।

अनेकों नवीन और शुभ कार्यों के लिए निम्न तिथियां त्याज्य हैं।

पक्षरन्ध्र या छिद्रा तिथियांः- दोनो पक्ष की 4,6,8,9,12 और 14 वीं तिथि के दिन यदि कार्य आवश्यक हो तो, 4 तिथि की प्रथम 8 घटी (192 मिनट) छोड़ दें, 6 तिथि की प्रथम 9 घटी (216 मिनट) छोड़ दें, 8 तिथि की प्रथम 14 घटी (336 मिनट) छोड़ दें, 9 तिथि की प्रथम 25 घटी (600 मिनट) छोड़ दें, 12 तिथि की प्रथम 10 घटी (240 मिनट) छोड़ दें और 14 तिथि की प्रथम 5 घटी (120 मिनट) छोड़ दें।

निम्न तिथियों में शुभ कार्य न करें।

मास शून्य तिथि	
मास	तिथियां (दोनो पक्षों की)
भाद्रपद	**1,2**
श्रावण	**2,3**
वैशाख	**12**
पौष	**4,5**
आश्विन	**10,11**
मार्गशीर्ष (अगहन)	**7,8**
चैत्र	**8,9**

केवल कृष्ण पक्ष की शून्य तिथियां	
मास	**तिथियां**
कार्तिक	**5**
आषाढ़	**6**
फाल्गुन	**4**
ज्येष्ठ	**14**
माघ	**5**

केवल शुक्ल पक्ष की शून्य तिथियां	
मास	**तिथियां**
कार्तिक	**14**
आषाढ़	**7**
फाल्गुन	**3**
ज्येष्ठ	**13**
माघ	**6**

नक्षत्र शून्य तिथियां (शुभ कार्य निषेध)

नक्षत्र	तिथियां (दोनो पक्षों की)

अश्लेषा	**12**
उत्तराषाढ़ा	**1**
अनुराधा	**2**
मघा	**5**
तीनों उत्तरा	**3**
स्वाती / चित्रा	**13**
हस्त/मूल	**7**
कृत्तिका	**9**
पूर्वाभाद्रपद	**8**
रोहिणी	**6, 11**

नोटः उपरोक्त तिथि नक्षत्रों के तात्कालिक योग के दिन शुभ कार्य न करें।

होलाष्टक तिथियांः- फाल्गुन शुक्ल पक्ष की अष्टमी से फाल्गुन की पूर्णिमा तक का समय होलाष्टक कहलाता है। इनमे अनेकों शुभ कार्य निषेध होते हैं।

तिथि गण्डातः- नन्दा तिथि (1,6,11) के शुरू में 1 घटी (24 मिनट) और तिथि (5,10,15) के अंत की 1 घटी (24 मिनट) छोड़कर शुभ कार्य कर सकते हैं।

पंच पर्व तिथियांः- यदि निम्न तिथियों में सूर्य संक्रांति हो तो, तिथियां शुभ कार्य के लिए त्याज्य हैं।

1 कृष्ण पक्ष की 8 तिथि
2 कृष्ण पक्ष की 14 तिथि
3 पूर्णिमा तिथि
4 अमावस्या तिथि
5 संक्रांति तिथि

यदि आवश्यक कार्य 16 संस्कार और संपत्ति से संबंधित हो तो सूर्य संक्रांति से आगे और पीछे 16 घटी (384 मिनट) को छोड़कर कार्य किया जा सकता है।

आवश्यक कार्य यदि रिक्ता तिथियों (4,9,14) और अमावस्या के दिन करना हो तो चावल दान करके कार्य किया जा सकता है।

वार

सूर्योदय से सूर्योदय तक के समय को वार की संज्ञा दी गई है। रविवार, मंगलवार, सूर्य संक्रान्ति, वृद्धि योग और हस्त नक्षत्र के दिन ऋण (कर्ज) नही लेना चाहिए। इंगित समय में लिया हुआ ऋण (कर्ज) आसानी से चुकता नही होता और मानसिक तनाव का कारण बनता है, जबकि ये दिन ऋण (कर्ज) चुकता करने के लिए श्रेष्ठ बताए गए हैं। बुधवार धन संग्रह, निवेश करना और बैंक में जमा करना आदि के लिए उत्तम वार है, इस दिन किसी को धन नही देना चाहिए।

वारों के नैसर्गिक स्वभाव, देवता आदि निम्न प्रकार से हैं:-

क्रम संख्या	वार	वारों के स्वामी ग्रह	वारों के देवता		त्याज्य कार्य
1	रविवार	सूर्य	शिव		
2	सोमवार	चन्द्रमा	दुर्गा		

3	मंगलवार	मंगल	कार्तिकेय		धन उधार लेना/ गृह प्रवेश
4	बुधवार	बुध	विष्णु		
5	गुरूवार	बृहस्पति	ब्रह्मा		
6	शुक्रवार	शुक्र	इन्द्र		मांस भक्षण
7	शनिवार	यम/काल			यात्रा

रविवारः को ध्रुव/स्थिर संज्ञक वार कहा जाता है। ध्रुव/स्थिर संज्ञक होने के कारण रविवार स्थिर कार्यों के लिए सहायक वार है जैसेः- गृह आरम्भ करना, गृह प्रवेश करना, बड़े उद्योग लगाना या आरंभ करना और उपनयन संस्कार आदि के लिए शुभ है। इस दिन ऋण (कर्ज़) नही लेना चाहिए।

सोमवारः को चर संज्ञक वार कहा जाता है। चर संज्ञक वार होने के कारण सोमवार चर कार्यों के लिए सहायक वार है जैसेः- यात्रा आरंभ करना, व्यापार के लिए सामान खरीदना और नौकरी के लिए आवेदन देना या नौकरी आरंभ करना आदि के लिए शुभ है। पशुओं से संबंधित कार्य त्याज्य हैं।

मंगलवारः को उग्र/क्रूर संज्ञक वार कहा जाता है। उग्र/क्रूर संज्ञक होने के कारण मंगलवार उग्र कार्यों के लिए सहायक वार है जैसेः- शस्त्रों से संबंधित कार्य आरंभ करना, हमला या फौजी कार्यवाही शुरू करना और शिकायत करना आदि के लिए शुभ है। इस दिन गृह प्रवेश निषिद्ध है। इस दिन ऋण (कर्ज़) नही लेना चाहिए।

बुधवारः को मिश्र संज्ञक वार कहा जाता है। मिश्र संज्ञक होने के कारण बुधवार सभी कार्यों के लिए सामान्य सहायक वार है जैसेः- लेखन कार्य,

व्यापारिक कार्य, गणित संबंधित कार्य और बैंक में खाता खुलवाना आदि के लिए शुभ है। पशुओं से संबंधित कार्य त्याज्य है। धन संग्रह करना उत्तम है। इस दिन धन कदापि नही देना चाहिए।

बृहस्पतिवारः को क्षिप्र/लघु संज्ञक वार कहा जाता है। लघु संज्ञक होने के कारण बृहस्पतिवार लघु कार्यों के लिए सहायक वार है जैसेः- विवाह कार्य आरंभ करना और आध्यात्मिक कार्य आरंभ करना आदि के लिए शुभ है।

शुक्रवारः को मृदु/मैत्री संज्ञक वार कहा जाता है। मृदु/मैत्री संज्ञक होने के कारण शुक्रवार मृदु कार्यों के लिए सहायक वार है जैसेः- आरामदायक वस्तुओं को खरीदना, संगीत या ड्रामा आदि का आरम्भ करना और नृत्य कला आदि के लिए शुभ है।

शनिवारः को तीक्ष्ण/दारूण संज्ञक वार कहा जाता है। तीक्ष्ण/दारूण संज्ञक होने के कारण शनिवार तीक्ष्ण कार्यों के लिए सहायक वार है जैसेः- नई दवा आरंभ करना और दीक्षा लेना आदि के लिए शुभ है। इस दिन यात्रा करना निषिद्ध है। पशुओं से संबंधित कार्य त्याज्य है।

यदि कोई मंगलवार संबंधित आवश्यक कार्य शुक्रवार के दिन करना हो तो ऐसी आपातकाल स्थिति में वार होरा का प्रयोग करके मंगलवार संबंधित कार्य शुक्रवार के दिन किया जा सकता है।

वार होरा

एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय तक 24 होरा होती हैं। प्रत्येक होरा एक घण्टे की होती है। जिस वार में होरा की गणना करनी हो उस वार के सूर्योदय से अगले एक घण्टे तक उसी वार की होरा होती है, उसके बाद दूसरी होरा उस वार से छठे वार की होती है, तीसरी होरा दूसरी होरा वार से छठे वार की होती है यही क्रम आगे चलता रहता है जैसे माना बुधवार को सूर्योदय 7 बजे हुआ तो पहली होरा 7 से 8 बजे तक बुधवार की होगी, दूसरी होरा 8 से 9 बजे तक सोमवार की होगी, तीसरी होरा 9 से 10 बजे तक शनिवार की होगी, चौथी होरा

10 से 11 बजे तक बृहस्पतिवार की होगी। यही क्रम अगले सूर्योदय तक चलता रहेगा।

आवश्यक कार्य अनुकूल वार न मिलने पर भी करना पड़े तो मंगलवार, शनिवार और रविवार को रत्न दान करके कार्य किया जा सकता है।

राहुकाल

राहुकाल में प्रत्येक स्थान के स्थानीय समय के अनुसार नवीन कार्य आरंभ न करें।

सोमवार 7.30 am से 9 am तक

मंगलवार 3.00 pm से 4.30 pm तक

बुधवार 12.00 noon से 1.30 pm तक

बृहस्पतिवार 1.30 pm से 3.00 pm तक

शुक्रवार 10.30 am से 12 noon तक

शनिवार 9.00 am से 10.30 am तक

रविवार 4.30 pm से 6.00 pm तक

रविवार के दिन एक विशेष **तिथि** के सहयोग से बनने वाले तात्कालिक शुभ और अशुभ योग निम्न प्रकार से हैं। यदि संभव हो तो अशुभ योगों और निषेध कार्य को प्रयोग में न लाएं, और यदि आपातकालीन कार्य है तो परिहारों के साथ करें, तो कार्य निर्विघ्न, शुभ और मंगलमय होगा।

क्रम संख्या	दोनो पक्षों की तिथियां	शुभ और अशुभ योग	योगों के नाम	निषेध कार्य
1	1	अशुभ	मृत्यु	यात्रा/शुभ कार्य
2	2			
3	3			
4	4	अशुभ	विष	यात्रा/शुभ कार्य
5	5			
6	6	अशुभ	मृत्यु	यात्रा/शुभ कार्य
7	7	अशुभ	संवर्तक (कुयोग)	
8	8			
9	9			
10	10			
11	11	अशुभ	मृत्यु	यात्रा/शुभ कार्य
12	12	अशुभ	क्रकच/दग्ध (अधम)/13/ हुताशन	यात्रा/शुभ कार्य
13	13			
14	14			
15	15 (पूर्णिमा)			
16	30 (अमावस्या)			

सोमवार के दिन एक विशेष **तिथि** के सहयोग से बनने वाले तात्कालिक शुभ और अशुभ योग निम्न प्रकार से हैं। यदि संभव हो तो अशुभ योगों और निषेध कार्य को प्रयोग में न लाएं, और यदि आपातकालीन कार्य है तो परिहारों के साथ करें, तो कार्य निर्विघ्न, शुभ और मंगलमय होगा।

क्रम संख्या	दोनो पक्षों की तिथियां	शुभ और अशुभ योग	योगों के नाम	निषेध कार्य
1	1			
2	2	अशुभ	मृत्यु	यात्रा/शुभ कार्य
3	3			
4	4			
5	5			
6	6	अशुभ	विष, हुताशन	यात्रा/शुभ कार्य
7	7	अशुभ	मृत्यु	यात्रा/शुभ कार्य
8	8			
9	9			
10	10			
11	11	अशुभ	क्रकच/अधम दग्ध/13	यात्रा/शुभ कार्य
12	12	अशुभ	मृत्यु	यात्रा/शुभ कार्य
13	13			
14	14			

15	15 (पूर्णिमा)			
16	30 (अमावस्या)			

मंगलवार के दिन एक विशेष **तिथि** के सहयोग से बनने वाले तात्कालिक शुभ और अशुभ योग निम्न प्रकार से हैं। यदि संभव हो तो अशुभ योगों और निषेध कार्य को प्रयोग में न लाएं, और यदि आपातकालीन कार्य है तो परिहारों के साथ करें, तो कार्य निर्विघ्न, शुभ और मंगलमय होगा।

क्रम संख्या	दोनो पक्षों की तिथियां	शुभ और अशुभ योग	योगों के नाम	निषेध कार्य
1	1	अशुभ	मृत्यु	यात्रा/शुभ कार्य
2	2			
3	3	शुभ	सिद्ध	
4	4			
5	5	अशुभ	अधम (दग्ध)	यात्रा/शुभ कार्य
6	6	अशुभ	मृत्यु	यात्रा/शुभ कार्य
7	7	अशुभ	विष/हुताशन	
8	8	शुभ	सिद्ध	
9	9			
10	10	अशुभ	क्रकच/अधम/13	यात्रा/शुभ कार्य
11	11	अशुभ	मृत्यु	यात्रा/शुभ कार्य

12	12			
13	13	शुभ	सिद्ध	
14	14			
15	15 (पूर्णिमा)			
16	30 (अमावस्या)			

बुधवार के दिन एक विशेष **तिथि** के सहयोग से बनने वाले तात्कालिक शुभ और अशुभ योग निम्न प्रकार से हैं। यदि संभव हो तो अशुभ योगों और निषेध कार्य को प्रयोग में न लाएं, और यदि आपातकालीन कार्य है तो परिहारों के साथ करें, तो कार्य निर्विघ्न, शुभ और मंगलमय होगा।

क्रम संख्या	दोनो पक्षों की तिथियां	शुभ और अशुभ योग		योगों के नाम		निषेध कार्य
1	1	अशुभ		संवर्तक (कुयोग)		
2	2	शुभ	अशुभ	सिद्ध	विष	
3	3	अशुभ		मृत्यु, अधम (दग्ध)		यात्रा/शुभ कार्य
4	4					
5	5					
6	6					
7	7	शुभ		सिद्ध		
8	8	अशुभ		मृत्यु/हुताशन		यात्रा/शुभ कार्य

9	9	अशुभ	क्रकच/अधम/13	यात्रा/शुभ कार्य
10	10			
11	11			
12	12	शुभ	सिद्ध	
13	13	अशुभ	मृत्यु	यात्रा/शुभ कार्य
14	14			
15	15 (पूर्णिमा)			
16	30 (अमावस्या)			

बृहस्पतिवार के दिन एक विशेष **तिथि** के सहयोग से बनने वाले तात्कालिक शुभ और अशुभ योग निम्न प्रकार से हैं। यदि संभव हो तो अशुभ योगों और निषेध कार्य को प्रयोग में न लाएं, और यदि आपातकालीन कार्य है तो परिहारों के साथ करें, तो कार्य निर्विघ्न, शुभ और मंगलमय होगा।

क्रम संख्या	दोनो पक्षों की तिथियां	शुभ और अशुभ योग	योगों के नाम	निषेध कार्य
1	1			
2	2			
3	3			
4	4	अशुभ	मृत्यु	यात्रा/शुभ कार्य
5	5	शुभ	सिद्ध	

6	6	अशुभ	दग्ध	यात्रा/शुभ कार्य
7	7			
8	8	अशुभ	क्रकच/अधम/13 /विष	यात्रा/शुभ कार्य
9	9	अशुभ	मृत्यु/हुताशन	यात्रा/शुभ कार्य
10	10	शुभ	सिद्ध	
11	11			
12	12			
13	13			
14	14	अशुभ	मृत्यु	यात्रा/शुभ कार्य
15	15 (पूर्णिमा)	शुभ	सिद्ध	
16	30 (अमावस्या)			

शुक्रवार के दिन एक विशेष **तिथि** के सहयोग से बनने वाले तात्कालिक शुभ और अशुभ योग निम्न प्रकार से हैं। यदि संभव हो तो अशुभ योगों और निषेध कार्य को प्रयोग में न लाएं, और यदि आपातकालीन कार्य है तो परिहारों के साथ करें, तो कार्य निर्विघ्न, शुभ और मंगलमय होगा।

क्रम संख्या	दोनो पक्षों की तिथियां	शुभ और अशुभ योग	योगों के नाम	निषेध कार्य
1	1	शुभ	सिद्ध	
2	2	अशुभ	मृत्यु	यात्रा/शुभ कार्य

3	3			
4	4			
5	5			
6	6	शुभ	सिद्ध	
7	7	अशुभ	मृत्यु/क्रकच/अधम /13	यात्रा/शुभ कार्य
8	8	अशुभ	दग्ध (अधम)	यात्रा/शुभ कार्य
9	9	अशुभ	विष	यात्रा/शुभ कार्य
10	10	अशुभ	हुताशन योग	यात्रा/शुभ कार्य
11	11	शुभ	सिद्ध	
12	12	अशुभ	मृत्यु	यात्रा/शुभ कार्य
13	13			
14	14			
15	15 (पूर्णिमा)			
16	30 (अमावस्या)			

शनिवार के दिन एक विशेष **तिथि** के सहयोग से बनने वाले तात्कालिक शुभ और अशुभ योग निम्न प्रकार से हैं। यदि संभव हो तो अशुभ योगों और निषेध कार्य को प्रयोग में न लाएं, और यदि आपातकालीन कार्य है तो परिहारों के साथ करें, तो कार्य निर्विघ्न, शुभ और मंगलमय होगा।

क्रम संख्या	दोनो पक्षों की तिथियां	शुभ और अशुभ योग		योगों के नाम		निषेध कार्य
1	1					
2	2					
3	3					
4	4	शुभ		सिद्ध		
5	5	अशुभ		मृत्यु		यात्रा/शुभ कार्य
6	6	अशुभ		क्रकच/अधम/13		यात्रा/शुभ कार्य
7	7	अशुभ		विष		यात्रा/शुभ कार्य
8	8					
9	9	शुभ	अशुभ	सिद्ध	दग्ध (अधम)	यात्रा/शुभ कार्य
10	10	अशुभ		मृत्यु		यात्रा/शुभ कार्य
11	11	अशुभ		हुताशन योग		यात्रा/शुभ कार्य
12	12					
13	13					
14	14	शुभ		सिद्ध		
15	15 (पूर्णिमा)	अशुभ		मृत्यु		यात्रा/शुभ कार्य
16	30 (अमावस्या)					

नक्षत्र

सूर्य के क्रान्तिवृत (सूर्य का भ्रमण मार्ग) के 27 बराबर भाग करने पर 27 नक्षत्रों की उत्पत्ति हुई। इस गणित से एक नक्षत्र का मान 360° ÷ 27 = 13°-20' होता है। आगे चलकर एक नक्षत्र को चार बराबर भागों में बाँटा जाता है जिसे नक्षत्र के चरण कहते हैं। इस गणित से एक चरण का मान (13°-20') ÷ 4 = 3°-20' होता है।

मुहूर्त के लिए नक्षत्रों की सामान्य जानकारी, कार्यक्षेत्र और कारक आदि निम्न प्रकार से हैं:-

नक्षत्रों के नाम	नक्षत्रों के स्वामी	नक्षत्रों के तत्व	नक्षत्रों में शुभता या अशुभता	नक्षत्रों के लिंग	नक्षत्रों में तारों की संख्या
अश्विनी	अश्विनी कुमार (देवताओं के चिकित्सक)	पृथ्वी	कार्य के लिए शुभ (गृह प्रवेश के लिए त्याज्य)	पुरूष	3
भरणी	यमराज (अन्तक)	पृथ्वी	कार्य के लिए नाशक	स्त्री	3
कृत्तिका	अग्नि (अनल)	पृथ्वी	कार्य के लिए नाशक	पुरूष	6
रोहिणी	ब्रह्मा (प्रजापति)	पृथ्वी	कार्य के लिए उत्तम	पुरूष	5

मृगशिरा	चन्द्रमा (शशभृत)	पृथ्वी	कार्य के लिए शुभ	पुरूष/स्त्री	3
आर्द्रा	महादेव (रूद्र)	जल	कार्य के लिए शुभ	स्त्री	1
पुनर्वसु	अदिति (देवताओं की माता)	जल	कार्य के लिए मध्यम	पुरूष	4
पुष्य	बृहस्पति (देवताओं के आचार्य)	जल	कार्य के लिए शुभ	पुरूष	3
अश्लेषा	सर्प (भुजंग)	जल	कार्य के लिए चिंताजनक	स्त्री	5
मघा	पितृगण (पित्तर)	जल	कार्य के लिए नाशक	पुरूष	5
पूर्वाफाल्गुनी	सूर्य (भग नामक सूर्य)	जल	कार्य के लिए मृत्यु कारक	स्त्री	2
उत्तराफाल्गुनी	सूर्य (अर्यमा नामक सूर्य)	अग्नि	कार्य के लिए शिक्षादायक	स्त्री	2
हस्त	सूर्य (आदित्य)	अग्नि	कार्य के लिए लक्ष्मीदायक	पुरूष	5
चित्रा	विश्वकर्मा (त्वष्टा)	अग्नि	कार्य के लिए शुभ	स्त्री	1
स्वाती	वायु (पवन)	अग्नि	कार्य के लिए अशुभ	स्त्री	1
विशाखा	इन्द्र और अग्नि	अग्नि	कार्य के लिए	स्त्री	4

	(इन्द्राग्नि)		अशुभ		
अनुराधा	सूर्य (मित्र नामक सूर्य)	वायु	कार्य के लिए उत्तम	स्त्री	4
ज्येष्ठा	इन्द्र (देवताओं के राजा)	वायु	कार्य के लिए क्षयप्रद	पुरूष/स्त्री	3
मूला	राक्षस (निऋति)	वायु	कार्य के लिए हानिकारक	स्त्री	11
पूर्वाषाढ़ा	जल (नीर)	वायु	कार्य के लिए हानिकारक	स्त्री	2
उत्तराषाढ़ा	विश्वेदेव (विश्वे)	वायु	कार्य के लिए वृद्धिकारक	स्त्री	2
अभिजित	ब्रह्मा (विधि)		कार्य के लिए उत्तम		3
श्रवण	गोविन्द (भगवान विष्णु)	वायु	कार्य के लिए सुखकारक	पुरूष/स्त्री	3
धनिष्ठा	वसु (धनिष्ठा)	आकाश	कार्य के लिए शुभ	पुरूष	4
शतभिषा	वरूण (अपांपति)	आकाश	कार्य के लिए शुभ	पुरूष	100
पूर्वाभाद्रपद	सूर्य (अजचरण नामक सूर्य)	आकाश	कार्य के लिए मृत्युकारक	पुरूष	2
उत्तरा भाद्रपद	सूर्य (अहिर्बुध्न्य नामक सूर्य)	आकाश	कार्य के लिए लक्ष्मीकारक	पुरूष	2
रेवती	सूर्य (पुषा नामक	आकाश	कार्य के लिए	स्त्री	32

	सूर्य)		कामकारक		

शुद्ध नक्षत्रः- वे नक्षत्र जो एक ही सूर्योदय को छू पाते हैं, शुद्ध नक्षत्र कहलाते हैं।

क्षय नक्षत्रः- वे नक्षत्र जो एक भी सूर्योदय को नही छू पाते हैं, क्षय नक्षत्र कहलाते हैं।

वृद्धि नक्षत्रः- वे नक्षत्र जो दो सूर्योदय को छू पाते हैं, वृद्धि नक्षत्र कहलाते हैं।

सभी नक्षत्र मानव जाति के कल्याणार्थ अनेकों कारक और गुण धर्म का प्रतिनिधित्व करते हैं जैसे- चोरी हुई वस्तु या खोई हुई वस्तु या गुम हुआ छोटा बालक या घर से चला गया व्यक्ति, किस दिशा में गया है, मिलेगा या नही मिलेगा और कब मिलेगा आदि का नक्षत्रों के आधार पर अनुमान लगाया जा सकता है। यदि इंगित घटना **अन्धाक्ष नक्षत्र** (रोहिणी, पुष्य, उत्तराफाल्गुनी, विशाखा, पूर्वाषाढ़ा, धनिष्ठा और रेवती) में हुई हो तो पूर्व दिशा में और शीघ्रलाभ की प्राप्ति का सूचक है। यदि इंगित घटना **मन्दाक्ष नक्षत्र** (मृगशिरा, अश्लेषा, हस्त, अुनराधा, उत्तराषाढ़ा, शतभिषा और अश्विनी) में हुई हो तो दक्षिण दिशा में और बहुत अधिक प्रयत्न के बाद लाभ की प्राप्ति का सूचक है। यदि इंगित घटना **मध्याक्ष नक्षत्र** (आर्द्रा, मघा, चित्रा, ज्येष्ठा, अभिजित, पूर्वाभाद्रपद और भरणी) में हुई हो तो पश्चिम दिशा में और बहुत प्रयत्न के बाद केवल सूचना मिलने पर भी लाभ नही होने का सूचक है। यदि इंगित घटना **सुलोचन नक्षत्र** (पुनर्वसु, पूर्वाफाल्गुनी, स्वाती, मूल, श्रवण, उत्तराभाद्रपद और कृत्तिका) में हुई हो तो उत्तर दिशा में और न तो सूचना और न ही लाभ का सूचक है।

रेवती, शतभिषा, अश्विनी, श्रवण और चित्रा नक्षत्रों में वस्तु खरीदना शुभ होता है। तीनों पूर्वा, विशाखा, कृत्तिका, अश्लेषा और भरणी नक्षत्रों में वस्तु बेचना शुभ होता

है। मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अुनराधा, तीनों उत्तरा, रोहिणी, हस्त, अश्विनी और पुष्य नक्षत्रों में दुकान खोलना शुभ होता है।

स्थिर या ध्रुव संज्ञक नक्षत्रः- उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद और रोहिणी स्थिर कार्यों को करने में सहायक होते हैं जैसे नई नौकरी आरंभ करना, ग्रह प्रवेश करना आदि।

चर संज्ञक नक्षत्रः- पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा और स्वाती चर कार्यों को करने में सहायक होते हैं जैसेः- वाहन का शुभारंभ करना, यात्रा पर जाना आदि।

उग्र या क्रूर (पाप) संज्ञक नक्षत्रः- पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा, पूर्वाभाद्रपद, भरणी और मघा, उग्र या क्रूर कार्यों को करने में सहायक होते हैं जैसेः- बन्दूक आदि का लाइसेन्स लेने की शुरूवात करना, किसी भी प्रकार के लड़ाई-झगड़े की शुरूवात करना या कोर्ट में पहली बार दस्तावेज देना आदि।

मिश्र संज्ञक नक्षत्रः- विशाखा और कृत्तिका, लगभग सभी कार्यों को करने में सहायक होते हैं पर विशेष तौर पर कला या मनोरंजन, नृत्य या संगीत और विवाह आदि का शुभारंभ करने के लिए प्रशस्त हैं।

क्षिप्र या लघु संज्ञक नक्षत्रः- हस्त, अश्विनी, पुष्य और अभिजित, क्षिप्र या लघु कार्यों को करने में सहायक होते हैं जैसेः- छोटी दुकान, सामान बेचना, पठन-पाठन, और औषधि प्रयोग आदि का आरंभ करना।

मृदु या मैत्री संज्ञक नक्षत्रः- मृगशिरा, अनुराधा, चित्रा और रेवती मृदु या मैत्री कार्यों को करने में सहायक होते हैं जैसेः- मनोरंजन, फैशन, आभूषण बनवाना या धारण करना, मित्रता और प्रेम-प्रसंग आदि का शुभारंभ करना।

दारूण या तीक्ष्ण नक्षत्रः- मूल, अश्लेषा, ज्येष्ठा और आर्द्रा दारूण या तीक्ष्ण कार्यों को करने में सहायक होते हैं जैसे :- पशुओं से संबंधित कार्य और शत्रुओं पर विजय प्राप्ति के लिए शुरूवात आदि करना।

अपने कार्य के अनुकूल नक्षत्र न मिले तो नक्षत्र स्वामी वाली तिथि में भी संबंधित नक्षत्र का कार्य किया जा सकता है।

श्रावण, कार्तिक, चैत्र और पौष के महीनों में मूल नक्षत्र का वास भूलोक में होता है, इसलिए इन महीनों में मूल नक्षत्र विशेष रूप से विचारणीय होता है, जबकि आषाढ़, भाद्रपद, आश्विन और माघ में मूल नक्षत्र का प्रभाव स्वर्गलोक में और मार्गशीर्ष, वैशाख, ज्येष्ठ और फाल्गुन में मूल नक्षत्र का प्रभाव पाताललोक में होता है।

एक बार फिर से सभी नक्षत्रों को तीन और संज्ञकों के साथ जोड़कर उनके कार्यों को और अधिक बल दिया जाता है, जो निम्न प्रकार से हैं।

उर्ध्वमुख (ऊपर दृष्टि) संज्ञक नक्षत्रः- उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद, रोहिणी, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, पुष्य और आर्द्रा, उर्ध्व संज्ञक कार्यों को करने में सहायक होते हैं जैसेः- बहुमंजिली इमारत और उच्चपद के लिए आवेदन देने का शुभारंभ करना और षोढ़श संस्कार करना आदि।

त्रियकमुख (सीधी दृष्टि) या तिर्यङमुख संज्ञक नक्षत्र :- रेवती, चित्रा, मृगशिरा, अनुराधा, हस्त, अश्विनी, पुनर्वसु, स्वाती और ज्येष्ठा, त्रियक (सीधी) कार्यों को करने में सहायक होते हैं जैसेः- वाहन खरीदना या चलाना और समुद्री यात्रा करना आदि।

अधोमुखी (नीचे दृष्टि) संज्ञक नक्षत्रः- पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा, पूर्वाभाद्रपद, भरणी, मघा, विशाखा, कृत्तिका, मूल और अश्लेषा, अधो (नीचे) कार्यों को करने में सहायक होते हैं जैसेः- गहरी खुदाई की शुरूवात करना और किसी गुप्त कार्य का शुभारंभ करना आदि।

पंचकः- जब चन्द्रमा कुम्भ राशि से मीन राशि तक गोचर करता है तो वह समय पंचक के नाम से जाना जाता है, जिसमें धनिष्ठा (तीसरा चरण और चौथा चरण) शतभिषा, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद और रेवती नक्षत्र शामिल हैं। इन नक्षत्रों में अनेकों विचारणीय विषय होते हैं जैसेः- दक्षिण दिशा की यात्रा निषेध है, लकड़ी का सामान खरीदना निषेध है और मृत्यु के समय विचारणीय आदि।

कुम्भ चक्रः- (केवल गृह प्रवेश के लिए विचारणीय) सूर्य के नक्षत्र से गिनकर चन्द्रमा तक के नक्षत्र का अन्तर यदि 0 से 5 तक हो तो गृह प्रवेश अशुभ, 6 से 13 तक हो तो गृह प्रवेश शुभ, 14 से 21 तक हो तो गृह प्रवेश अशुभ और 22 से 27 तक हो तो गृह प्रवेश शुभ होता है।

चन्द्रमास शून्य नक्षत्रः- (धन का नाश या अपव्यय से बचने के लिए विचारणीय नक्षत्र) यदि संभव हो तो निम्न चन्द्रमासों में इंगित नक्षत्रों के दिन धन से संबंधित कार्य न करें।

चन्द्रमास	नक्षत्र
चैत्र	रोहिणी, अश्विनी
वैशाख	चित्रा, स्वाती
ज्येष्ठ	उत्तराषाढ़ा, पुष्य
आषाढ़	पूर्वाफाल्गुनी, धनिष्ठा
श्रावण	उत्तराषाढ़ा, श्रवण
भाद्रपद	शतभिषा, रेवती
आश्विन	पूर्वाभाद्रपद

कार्तिक	कृत्तिका, मघा
मार्गशीर्ष	चित्रा, विशाखा
पौष	आर्द्रा, अश्विनी, हस्त
माघ	श्रवण, मूल
फाल्गुन	भरणी, ज्येष्ठा

पूर्ण ग्रहण जिस नक्षत्र में हो उस नक्षत्र का त्याग अगले छः माह तक, अर्ध ग्रहण हो तो तीन माह तक और चौथाई ग्रहण हो तो एक माह तक करना चाहिए। ग्रहण के दिन सहित अगले तीन दिनों और पिछले तीन दिनों तक शुभ कार्य विचारणीय होते हैं।

रवियोग

यदि किसी विशेष कार्य के लिए इंगित नक्षत्र की प्राप्ति नही होती है तो **रवियोग** का प्रयोग करना चाहिए, जो एक तात्कालिक शुभ योग है और सभी प्रकार के कुयोगों की अशुभता को न्यूनतम या समाप्त करने में सहायक होता है। सूर्यनक्षत्र से चन्द्रनक्षत्र यदि 4,6,9,10,13 और 20 हो, तो उस दिन रवि योग बनता है। आवश्यक कार्य हो और अनुकूल नक्षत्र न हो तो गो दान या गो के लिए चारादान करके कार्य किया जा सकता है।

यदि आपके कार्य के अनुकूल नक्षत्र उपलब्ध हो जाए तो उसमें अपने जन्म नक्षत्र आदि से भी तुलना करके देख लेना चाहिए। जिस नक्षत्र में आपका जन्म हुआ है, उसे जन्म नक्षत्र कहते हैं। उसके बाद क्रमशः सम्पत, विपत (अशुभ), क्षेम, प्रत्यरि (अशुभ), साधक, वध (अशुभ), मैत्र और अतिमैत्र की पहली आवृति उसके बाद दूसरी आवृति और अंत में तीसरी आवृति होती है। ध्यान रहे विपत, प्रत्यरि और वध शुभ नही होते, इसलिए इन नक्षत्रों में कार्य आरंभ न करें, यदि पहली आवृति का अशुभ (विपत, प्रत्यरि और वध) नक्षत्र है तो 60 घटी (पूरा दिन) त्याज्य है,

दूसरी आवृति का अशुभ (विपत, प्रत्यरि और वध) नक्षत्र है तो पहली 20 घटी (8 घण्टे) त्याज्य हैं और यदि तीसरी आवृति का अशुभ (विपत, प्रत्यरि और वध) नक्षत्र पड़ता है तो भी कार्य किया जा सकता है। यदि कार्य अति आवश्यक है और आपके अनुकूल नक्षत्र आपके जन्म नक्षत्र की पहली ही आवृति के अशुभ (विपत, प्रत्यरि और वध) में आता है तो परिहारों का प्रयोग करके अपना कार्य किया जा सकता है जैसे विपत के लिए गुड़ दान करना, प्रत्यरि के लिए नमक दान करना और वध के लिए स्वर्ण या काले तिल दान करना चाहिए।

अनेकों कार्य के लिए जन्म नक्षत्र को भी शुभ नही माना जाता है जैसेः- जन्म नक्षत्र के दिन औषधि आरंभ नही करनी चाहिए, उसके परिहार के लिए कार्य आरंभ से पहले सब्जी आदि का दान करना चाहिए।

मंगलवार, रविवार या गुरूवार के दिन यदि अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, ज्येष्ठा, श्रवण या शतभिषा नक्षत्र हो तो शल्यचिकित्सा में शीघ्र लाभ के लिए सहायक मुहूर्त है। रविवार, सोमवार, मंगलवार, बृहस्पतिवार या शुक्रवार के दिन यदि अश्विनी, रोहिणी, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, श्रवण या शतभिषा नक्षत्र हो तो नई औषधी आरंभ करना स्वास्थ्य लाभ के लिए सहायक होता है।

रविवार के दिन एक विशेष **नक्षत्र** के सहयोग से बनने वाले तात्कालिक शुभ और अशुभ योग निम्न प्रकार से हैं। यदि संभव हो तो अशुभ योगों और निषेध कार्य को प्रयोग में न लाएं, और यदि आपातकालीन कार्य है तो परिहारों के साथ करें, तो कार्य निर्विघ्न, शुभ और मंगलमय होगा।

क्रम	नक्षत्रों के नाम	शुभ/अशुभ योग	शुभ/अशुभ	निषेध कार्य तथा अशुभ योगों की

संख्या			योगों के नाम	त्याज्य आरंभिक घटी (मिनट)
1	अश्विनी	शुभ	सर्वार्थ सिद्धि	
2	भरणी	अशुभ	दग्ध (अधम)	यात्रा/शुभ कार्य
3	कृत्तिका	अशुभ	कुयोग	
4	रोहिणी	शुभ	अमृत	
5	मृगशिरा			
6	आर्द्रा			
7	पुनर्वसु			
8	पुष्य	शुभ	अमृत/सर्वार्थ सिद्धि/रविपुष्य	
9	अश्लेषा	शुभ	सर्वार्थ सिद्धि	
10	मघा	अशुभ	यम घण्ट	यात्रा/शुभ कार्य
11	पूर्वाफाल्गुनी			
12	उत्तराफाल्गुनी	शुभ	अमृतसिद्धि/ सर्वार्थ सिद्धि	
13	हस्त	शुभ	अमृतसिद्धि/ सर्वार्थ सिद्धि/हस्त आदित्य योग	
14	चित्रा			

15	स्वाती			
16	विशाखा	अशुभ	उत्पात	
17	अनुराधा	अशुभ	मृत्यु	
18	ज्येष्ठा	अशुभ	काण	
19	मूला	शुभ	अमृत/ सर्वार्थ सिद्धि	
20	पूर्वाषाढ़ा			
21	उत्तराषाढ़ा	शुभ	अमृत सिद्धि/सर्वार्थ सिद्धि	
22	अभिजित			
23	श्रवण			
24	धनिष्ठा	अशुभ	कुयोग	
25	शतभिषा			
26	पूर्वा भाद्रपद			
27	उत्तरा भाद्रपद	शुभ	अमृत सिद्धि/सर्वार्थ सिद्धि	
28	रेवती	शुभ	प्रशस्त/अमृत	

ध्वांक्ष, वज्र और मुद्गर योगों की आरंभिक 5 घटी, पद्म और लुम्ब योगों की आरंभिक 4 घटी, गदयोग की आरंभिक 7 घटी, धूम्रयोग की आरंभिक 1 घटी,

काणयोग की आरंभिक 2 घटी और मुसलयोग की आरंभिक 2 घटी को छोड़कर उनकी शेष घटियों में शुभ कार्य किया जा सकता है, जबकि राक्षस, मृत्यु, उत्पात और काल योगों की पूर्ण घटियां शुभ कार्यों के लिए त्याज्य हैं। (1 घटी = 24 मिनट)

सोमवार के दिन एक विशेष **नक्षत्र** के सहयोग से बनने वाले तात्कालिक शुभ और अशुभ योग निम्न प्रकार से हैं। यदि संभव हो तो अशुभ योगों और निषेध कार्य को प्रयोग में न लाएं, और यदि आपातकालीन कार्य है तो परिहारों के साथ करें, तो कार्य निर्विघ्न, शुभ और मंगलमय होगा।

क्रम संख्या	नक्षत्रों के नाम	शुभ/अशुभ योग	शुभ/अशुभ योगों के नाम	निषेध कार्य तथा अशुभ योगों की त्याज्य आरंभिक घटी (मिनट)
1	अश्विनी	शुभ	अमृत	
2	भरणी			
3	कृत्तिका			
4	रोहिणी	शुभ	अमृत/सर्वार्थ सिद्धि	
5	मृगशिरा	शुभ	अमृत सिद्धि/अमृत/ सर्वार्थ सिद्धि	
6	आर्द्रा	अशुभ	कुयोग	
7	पुनर्वसु			

8	पुष्य	शुभ	अशुभ	सर्वार्थ सिद्धि	कुयोग	
9	अश्लेषा					
10	मघा					
11	पूर्वाफाल्गुनी	शुभ		अमृत		
12	उत्तराफाल्गुनी	शुभ		अमृत		
13	हस्त	शुभ		प्रशस्त/अमृत		
14	चित्रा	अशुभ		दग्ध (अधम)		यात्रा/शुभ कार्य
15	स्वाती	अशुभ		कुयोग		
16	विशाखा	अशुभ		यम घण्ट		यात्रा/शुभ कार्य
17	अनुराधा	शुभ		सर्वार्थ सिद्धि		
18	ज्येष्ठा					
19	मूला					
20	पूर्वाषाढ़ा	अशुभ		उत्पात		
21	उत्तराषाढ़ा	अशुभ		मृत्यु		
22	अभिजित	अशुभ		काण		
23	श्रवण	शुभ		सिद्ध/अमृत/सर्वार्थ सिद्धि		
24	धनिष्ठा	शुभ		अमृत		
25	शतभिषा					

26	पूर्वा भाद्रपद	शुभ	अमृत	
27	उत्तरा भाद्रपद			
28	रेवती			

ध्वांक्ष, वज्र और मुद्गर योगों की आरंभिक 5 घटी, पद्म और लुम्ब योगों की आरंभिक 4 घटी, गदयोग की आरंभिक 7 घटी, धूम्रयोग की आरंभिक 1 घटी, काणयोग की आरंभिक 2 घटी और मुसलयोग की आरंभिक 2 घटी को छोड़कर उनकी शेष घटियों में शुभ कार्य किया जा सकता है, जबकि राक्षस, मृत्यु, उत्पात और काल योगों की पूर्ण घटियां शुभ कार्यों के लिए त्याज्य हैं। (1 घटी = 24 मिनट)

मंगलवार के दिन एक विशेष **नक्षत्र** के सहयोग से बनने वाले तात्कालिक शुभ और अशुभ योग निम्न प्रकार से हैं। यदि संभव हो तो अशुभ योगों और निषेध कार्य को प्रयोग में न लाएं, और यदि आपातकालीन कार्य है तो परिहारों के साथ करें, तो कार्य निर्विघ्न, शुभ और मंगलमय होगा।

क्रम संख्या	नक्षत्रों के नाम	शुभ/अशुभ योग	शुभ/अशुभ योगों के नाम	निषेध कार्य तथा अशुभ योगों की त्याज्य आरंभिक घटी (मिनट)
1	अश्विनी	शुभ	अमृत सिद्धि / सर्वार्थ सिद्धि	गृहनिर्माण और गृहप्रवेश त्याज्य
2	भरणी			
3	कृत्तिका	शुभ	अमृत सिद्धि/ सर्वार्थ सिद्धि	
4	रोहिणी			

5	मृगशिरा					
6	आर्द्रा	अशुभ		यम घण्ट		यात्रा/शुभ कार्य
7	पुनर्वसु					
8	पुष्य	शुभ		प्रशस्त/अमृत		
9	अश्लेषा	शुभ	अशुभ	अमृत/ सर्वार्थ सिद्धि	कुयोग	
10	मघा					
11	पूर्वाफाल्गुनी					
12	उत्तराफाल्गुनी	शुभ		सर्वार्थ सिद्धि		
13	हस्त					
14	चित्रा					
15	स्वाती	शुभ		अमृत		
16	विशाखा					
17	अनुराधा	अशुभ		कुयोग		
18	ज्येष्ठा					
19	मूला					
20	पूर्वाषाढ़ा					
21	उत्तराषाढ़ा	अशुभ		दग्ध (अधम)		यात्रा/ शुभ कार्य
22	अभिजित					

23	श्रवण			
24	धनिष्ठा	अशुभ	उत्पात	
25	शतभिषा	अशुभ	मृत्यु	
26	पूर्वा भाद्रपद	अशुभ	काण	
27	उत्तरा भाद्रपद	शुभ	सर्वार्थ सिद्ध/ अमृत/	
28	रेवती	शुभ	अमृत	

ध्वांक्ष, वज्र और मुद्गर योगों की आरंभिक 5 घटी, पद्म और लुम्ब योगों की आरंभिक 4 घटी, गदयोग की आरंभिक 7 घटी, धूम्रयोग की आरंभिक 1 घटी, काणयोग की आरंभिक 2 घटी और मुसलयोग की आरंभिक 2 घटी को छोड़कर उनकी शेष घटियों में शुभ कार्य किया जा सकता है, जबकि राक्षस, मृत्यु, उत्पात और काल योगों की पूर्ण घटियां शुभ कार्यों के लिए त्याज्य हैं। (1 घटी = 24 मिनट)

बुधवार के दिन एक विशेष **नक्षत्र** के सहयोग से बनने वाले तात्कालिक शुभ और अशुभ योग निम्न प्रकार से हैं। यदि संभव हो तो अशुभ योगों और निषेध कार्य को प्रयोग में न लाएं, और यदि आपातकालीन कार्य है तो परिहारों के साथ करें, तो कार्य निर्विघ्न, शुभ और मंगलमय होगा।

क्रम संख्या	नक्षत्रों के नाम	शुभ/अशुभ योग	शुभ/अशुभ योगों के नाम	निषेध कार्य तथा अशुभ योगों की त्याज्य आरंभिक घटी (मिनट)
1	अश्विनी	अशुभ	मृत्यु	

2	भरणी	अशुभ	काण	
3	कृत्तिका	शुभ	सिद्ध/अमृत/सर्वार्थ सिद्धि	
4	रोहिणी	शुभ	प्रशस्त/अमृत/ सर्वार्थ सिद्धि	
5	मृगशिरा	शुभ	सर्वार्थ सिद्धि	
6	आर्द्रा	अशुभ	कुयोग	
7	पुनर्वसु			
8	पुष्य			
9	अश्लेषा			
10	मघा			
11	पूर्वाफाल्गुनी	अशुभ	कुयोग	
12	उत्तराफाल्गुनी			
13	हस्त	शुभ	सर्वार्थ सिद्धि	
14	चित्रा			
15	स्वाती			
16	विशाखा			
17	अनुराधा	शुभ	अमृत सिद्धि/अमृत/ सर्वार्थ सिद्धि	

18	ज्येष्ठा			
19	मूला	अशुभ	यम घण्ट	यात्रा/शुभ कार्य
20	पूर्वाषाढ़ा			
21	उत्तराषाढ़ा			
22	अभिजित			
23	श्रवण			
24	धनिष्ठा	अशुभ	दग्ध (अधम)	
25	शतभिषा	शुभ	अमृत	
26	पूर्वा भाद्रपद			
27	उत्तरा भाद्रपद			
28	रेवती	अशुभ	उत्पात	

ध्वांक्ष, वज्र और मुद्गर योगों की आरंभिक 5 घटी, पद्म और लुम्ब योगों की आरंभिक 4 घटी, गदयोग की आरंभिक 7 घटी, धूम्रयोग की आरंभिक 1 घटी, काणयोग की आरंभिक 2 घटी और मुसलयोग की आरंभिक 2 घटी को छोड़कर उनकी शेष घटियों में शुभ कार्य किया जा सकता है, जबकि राक्षस, मृत्यु, उत्पात और काल योगों की पूर्ण घटियां शुभ कार्यों के लिए त्याज्य हैं। (1 घटी = 24 मिनट)

बृहस्पतिवार के दिन एक विशेष **नक्षत्र** के सहयोग से बनने वाले तात्कालिक शुभ और अशुभ योग निम्न प्रकार से हैं। यदि संभव हो तो अशुभ योगों और निषेध कार्य को प्रयोग में न लाएं, और यदि आपातकालीन कार्य है तो परिहारों के साथ करें, तो कार्य निर्विघ्न, शुभ और मंगलमय होगा।

क्रम संख्या	नक्षत्रों के नाम	शुभ/अशुभ योग	शुभ/अशुभ योगों के नाम	निषेध कार्य तथा अशुभ योगों की त्याज्य आरंभिक घटी (मिनट)
1	अश्विनी	शुभ	सर्वार्थ सिद्धि	
2	भरणी	अशुभ	कुयोग	
3	कृत्तिका	अशुभ	यम घण्ट	यात्रा/शुभ कार्य
4	रोहिणी	अशुभ	उत्पात	
5	मृगशिरा	अशुभ	मृत्यु	
6	आर्द्रा	अशुभ	काण	
7	पुनर्वसु	शुभ	सिद्ध/अमृत/सर्वार्थ सिद्धि	
8	पुष्य	शुभ	गुरूपुष्य/अमृतसिद्धि/ अमृत/सर्वार्थ सिद्धि	विवाह त्याज्य
9	अश्लेषा			
10	मघा	अशुभ	कुयोग	
11	पूर्वाफाल्गुनी			
12	उत्तराफाल्गुनी	अशुभ	दग्ध (अधम)	यात्रा/शुभ कार्य
13	हस्त			
14	चित्रा			
15	स्वाती	शुभ	प्रशस्त/अमृत	

16	विशाखा					
17	अनुराधा	शुभ		अमृत/सर्वार्थ सिद्धि		
18	ज्येष्ठा					
19	मूला	अशुभ		कुयोग		
20	पूर्वाषाढ़ा					
21	उत्तराषाढ़ा					
22	अभिजित					
23	श्रवण					
24	धनिष्ठा					
25	शतभिषा	अशुभ		कुयोग		
26	पूर्वा भाद्रपद					
27	उत्तरा भाद्रपद					
28	रेवती	शुभ	अशुभ	सर्वार्थ सिद्धि	कुयोग	

ध्वांक्ष, वज्र और मुद्गर योगों की आरंभिक 5 घटी, पद्म और लुम्ब योगों की आरंभिक 4 घटी, गदयोग की आरंभिक 7 घटी, धूम्रयोग की आरंभिक 1 घटी, काणयोग की आरंभिक 2 घटी और मुसलयोग की आरंभिक 2 घटी को छोड़कर उनकी शेष घटियों में शुभ कार्य किया जा सकता है, जबकि राक्षस, मृत्यु, उत्पात और काल योगों की पूर्ण घटियां शुभ कार्यों के लिए त्याज्य हैं। (1 घटी = 24 मिनट)

शुक्रवार के दिन एक विशेष **नक्षत्र** के सहयोग से बनने वाले तात्कालिक शुभ और अशुभ योग निम्न प्रकार से हैं। यदि संभव हो तो अशुभ योगों और निषेध

कार्य को प्रयोग में न लाएं, और यदि आपातकालीन कार्य है तो परिहारों के साथ करें, तो कार्य निर्विघ्न, शुभ और मंगलमय होगा।

क्रम संख्या	नक्षत्रों के नाम	शुभ/अशुभ योग	शुभ/अशुभ योगों के नाम	निषेध कार्य तथा अशुभ योगों की त्याज्य आरंभिक घटी (मिनट)
1	अश्विनी	शुभ	अमृत/सर्वार्थ सिद्धि	
2	भरणी			
3	कृत्तिका			
4	रोहिणी	अशुभ	यम घण्ट	यात्रा/शुभ कार्य
5	मृगशिरा			
6	आर्द्रा			
7	पुनर्वसु	शुभ	सर्वार्थ सिद्धि	
8	पुष्य	अशुभ	उत्पात	
9	अश्लेषा	अशुभ	मृत्यु	
10	मघा	अशुभ	काण	
11	पूर्वाफाल्गुनी	शुभ	सिद्ध/अमृत	
12	उत्तराफाल्गुनी	शुभ / अशुभ	प्रशस्त/अमृत / कुयोग	
13	हस्त			
14	चित्रा			

15	स्वाती	अशुभ		कुयोग		
16	विशाखा					
17	अनुराधा	शुभ		अमृत/सर्वार्थ सिद्धि		
18	ज्येष्ठा	अशुभ		दग्ध (अधम)		यात्रा/शुभ कार्य
19	मूला					
20	पूर्वाषाढ़ा					
21	उत्तराषाढ़ा	अशुभ		कुयोग		
22	अभिजित					
23	श्रवण	शुभ		अमृत/सर्वार्थ सिद्धि		
24	धनिष्ठा					
25	शतभिषा					
26	पूर्वा भाद्रपद	शुभ		अमृत		
27	उत्तरा भाद्रपद	शुभ	अशुभ	अमृत	कुयोग	
28	रेवती	शुभ		अमृत सिद्धि/सर्वार्थ सिद्धि		

ध्वांक्ष, वज्र और मुद्गर योगों की आरंभिक 5 घटी, पद्म और लुम्ब योगों की आरंभिक 4 घटी, गदयोग की आरंभिक 7 घटी, धूम्रयोग की आरंभिक 1 घटी, काणयोग की आरंभिक 2 घटी और मुसलयोग की आरंभिक 2 घटी को छोड़कर उनकी शेष घटियों में शुभ कार्य किया जा सकता है, जबकि राक्षस, मृत्यु, उत्पात और काल योगों की पूर्ण घटियां शुभ कार्यों के लिए त्याज्य हैं। (1 घटी = 24 मिनट

शनिवार के दिन एक विशेष **नक्षत्र** के सहयोग से बनने वाले तात्कालिक शुभ और अशुभ योग निम्न प्रकार से हैं। यदि संभव हो तो अशुभ योगों और निषेध कार्य को प्रयोग में न लाएं, और यदि आपातकालीन कार्य है तो परिहारों के साथ करें, तो कार्य निर्विघ्न, शुभ और मंगलमय होगा।

क्रम संख्या	नक्षत्रों के नाम	शुभ/अशुभ योग	शुभ/अशुभ योगों के नाम	निषेध कार्य तथा अशुभ योगों की त्याज्य आरंभिक घटी (मिनट)
1	अश्विनी			
2	भरणी			
3	कृत्तिका			
4	रोहिणी	शुभ	अमृत सिद्धि/ अमृत/ सर्वार्थ सिद्धि	यात्रा त्याज्य
5	मृगशिरा			
6	आर्द्रा			
7	पुनर्वसु			
8	पुष्य			
9	अश्लेषा			
10	मघा	अशुभ	कुयोग	
11	पूर्वाफाल्गुनी			
12	उत्तराफाल्गुनी	अशुभ	उत्पात	

13	हस्त	अशुभ		मृत्यु/यम घण्ट		यात्रा/शुभ कार्य
14	चित्रा	अशुभ		काण		
15	स्वाती	शुभ		सिद्ध/अमृत/सर्वार्थ सिद्धि		
16	विशाखा					
17	अनुराधा					
18	ज्येष्ठा					
19	मूला	शुभ	अशुभ	प्रशस्त	कुयोग	
20	पूर्वाषाढ़ा	अशुभ		कुयोग		
21	उत्तराषाढ़ा	अशुभ		कुयोग		
22	अभिजित					
23	श्रवण	शुभ	अशुभ	सर्वार्थ सिद्धि	कुयोग	
24	धनिष्ठा					
25	शतभिषा	अशुभ		कुयोग		
26	पूर्वा भाद्रपद					
27	उत्तरा भाद्रपद					
28	रेवती	अशुभ		दग्ध (अधम)		

ध्वांक्ष, वज्र और मुद्गर योगों की आरंभिक 5 घटी, पद्म और लुम्ब योगों की आरंभिक 4 घटी, गदयोग की आरंभिक 7 घटी, धूम्रयोग की आरंभिक 1 घटी, काणयोग की आरंभिक 2 घटी और मुसलयोग की आरंभिक 2 घटी को छोड़कर

उनकी शेष घटियों में शुभ कार्य किया जा सकता है, जबकि राक्षस, मृत्यु, उत्पात और काल योगों की पूर्ण घटियां शुभ कार्यों के लिए त्याज्य हैं। (1 घटी = 24 मिनट)

रविवार के दिन एक विशेष **नक्षत्र** और एक विशेष **तिथि** के सहयोग से बनने वाले तात्कालिक शुभ और अशुभ योग निम्न प्रकार से हैं। यदि संभव हो तो अशुभ योगों और निषेध कार्य को प्रयोग में न लाएं, और यदि आपातकालीन कार्य है तो परिहारों के साथ करें, तो कार्य निर्विघ्न, शुभ और मंगलमय होगा। (तीन चरण वाले नक्षत्र त्रिपुष्कर, दो चरण वाले नक्षत्र द्विपुष्कर योग बनाते हैं।)

क्रम संख्या	नक्षत्रों के नाम	दोनो पक्षों की तिथियां		शुभ और अशुभ योग		योगों के नाम		निषेध कार्य
1	अश्विनी							
2	भरणी							
3	कृत्तिका	2,7,12	5	शुभ	अशुभ	त्रिपुष्कर	हलाहल	
4	रोहिणी							
5	मृगशिरा	2,7,12		शुभ		द्विपुष्कर		
6	आर्द्रा							
7	पुनर्वसु	2,7,12		शुभ		त्रिपुष्कर		
8	पुष्य	5,7		शुभ		सुधा		
9	अश्लेषा							
10	मघा							
11	पूर्वाफाल्गुनी							
12	उत्तराफाल्गुनी	2,7,12		शुभ		त्रिपुष्कर		

13	हस्त	5,7	5	शुभ	अशुभ	सुधा	मधुसर्पिश	
14	चित्रा	2,7,12		शुभ		द्विपुष्कर		
15	स्वाती							
16	विशाखा	2,7,12		शुभ		त्रिपुष्कर		
17	अनुराधा							
18	ज्येष्ठा							
19	मूला	5,7		शुभ		सुधा		
20	पूर्वाषाढ़ा							
21	उत्तराषाढ़ा	2,7,12		शुभ		त्रिपुष्कर		
22	अभिजित							
23	श्रवण							
24	धनिष्ठा	2,7,12		शुभ		द्विपुष्कर		
25	शतभिषा							
26	पूर्वा भाद्रपद	2,7,12		शुभ		त्रिपुष्कर		
27	उत्तरा भाद्रपद							
28	रेवती							

सोमवार के दिन एक विशेष **नक्षत्र** और एक विशेष **तिथि** के सहयोग से बनने वाले तात्कालिक शुभ और अशुभ योग निम्न प्रकार से हैं। यदि संभव हो तो अशुभ

योगों और निषेध कार्य को प्रयोग में न लाएं, और यदि आपातकालीन कार्य है तो परिहारों के साथ करें, तो कार्य निर्विघ्न, शुभ और मंगलमय होगा।

क्रम संख्या	नक्षत्रों के नाम	दोनो पक्षों की तिथियां		शुभ और अशुभ योग		योगों के नाम		निषेध कार्य
1	अश्विनी							
2	भरणी							
3	कृत्तिका							
4	रोहिणी							
5	मृगशिरा	5,7	6	शुभ	अशुभ	सुधा	मधुसर्पिश	
6	आर्द्रा							
7	पुनर्वसु							
8	पुष्य							
9	अश्लेषा							
10	मघा							
11	पूर्वाफाल्गुनी							
12	उत्तराफाल्गुनी							
13	हस्त							
14	चित्रा	2		अशुभ		हलाहल		
15	स्वाती	5,7		शुभ		सुधा		

16	विशाखा				
17	अनुराधा				
18	ज्येष्ठा				
19	मूला				
20	पूर्वाषाढ़ा				
21	उत्तराषाढ़ा				
22	अभिजित				
23	श्रवण	5,7	शुभ	सुधा	
24	धनिष्ठा				
25	शतभिषा				
26	पूर्वा भाद्रपद				
27	उत्तरा भाद्रपद				
28	रेवती				

मंगलवार के दिन एक विशेष **नक्षत्र** और एक विशेष **तिथि** के सहयोग से बनने वाले तात्कालिक शुभ और अशुभ योग निम्न प्रकार से हैं। यदि संभव हो तो अशुभ योगों और निषेध कार्य को प्रयोग में न लाएं, और यदि आपातकालीन कार्य है तो परिहारों के साथ करें, तो कार्य निर्विघ्न, शुभ और मंगलमय होगा।

क्रम संख्या	नक्षत्रों के नाम	दोनो पक्षों की तिथियां	शुभ और अशुभ योग	योगों के नाम	निषेध कार्य

1	अश्विनी	5,7	7	शुभ	अशुभ	सुधा	मधुसर्पिश	
2	भरणी							
3	कृत्तिका	2,7,12		शुभ		त्रिपुष्कर		
4	रोहिणी	5,7	15	शुभ	अशुभ	सुधा	हलाहल	
5	मृगशिरा	2,7,12		शुभ		द्विपुष्कर		
6	आर्द्रा							
7	पुनर्वसु	2,7,12		शुभ		त्रिपुष्कर		
8	पुष्य							
9	अश्लेषा							
10	मघा							
11	पूर्वाफाल्गुनी							
12	उत्तराफाल्गुनी	5,7	2,7,12	शुभ	शुभ	सुधा	त्रिपुष्कर	
13	हस्त							
14	चित्रा	2,7,12		शुभ		द्विपुष्कर		
15	स्वाती							
16	विशाखा	2,7,12		शुभ		त्रिपुष्कर		
17	अनुराधा							
18	ज्येष्ठा							
19	मूला							

20	पूर्वाषाढ़ा							
21	उत्तराषाढ़ा	5,7,	2,7,12	शुभ	शुभ	सुधा	त्रिपुष्कर	
22	अभिजित							
23	श्रवण							
24	धनिष्ठा	2,7,12		शुभ		द्विपुष्कर		
25	शतभिषा							
26	पूर्वा भाद्रपद	2,7,12		शुभ		त्रिपुष्कर		
27	उत्तरा भाद्रपद	5,7		शुभ		सुधा		
28	रेवती							

बुधवार के दिन एक विशेष **नक्षत्र** और एक विशेष **तिथि** के सहयोग से बनने वाले तात्कालिक शुभ और अशुभ योग निम्न प्रकार से हैं। यदि संभव हो तो अशुभ योगों और निषेध कार्य को प्रयोग में न लाएं, और यदि आपातकालीन कार्य है तो परिहारों के साथ करें, तो कार्य निर्विघ्न, शुभ और मंगलमय होगा।

क्रम संख्या	नक्षत्रों के नाम	दोनो पक्षों की तिथियां	शुभ और अशुभ योग	योगों के नाम	निषेध कार्य
1	अश्विनी	5,7	शुभ	सुधा	
2	भरणी	7	अशुभ	हलाहल	
3	कृत्तिका				
4	रोहिणी				

5	मृगशिरा				
6	आर्द्रा				
7	पुनर्वसु				
8	पुष्य				
9	अश्लेषा				
10	मघा				
11	पूर्वाफाल्गुनी	5,7	शुभ	सुधा	
12	उत्तराफाल्गुनी				
13	हस्त				
14	चित्रा				
15	स्वाती				
16	विशाखा				
17	अनुराधा	8	अशुभ	मधुसर्पिश	
18	ज्येष्ठा				
19	मूला				
20	पूर्वाषाढ़ा	5,7	शुभ	सुधा	
21	उत्तराषाढ़ा				
22	अभिजित				
23	श्रवण				

24	धनिष्ठा				
25	शतभिषा				
26	पूर्वा भाद्रपद	5,7	शुभ	सुधा	
27	उत्तरा भाद्रपद				
28	रेवती				

बृहस्पतिवार के दिन एक विशेष **नक्षत्र** और एक विशेष **तिथि** के सहयोग से बनने वाले तात्कालिक शुभ और अशुभ योग निम्न प्रकार से हैं। यदि संभव हो तो अशुभ योगों और निषेध कार्य को प्रयोग में न लाएं, और यदि आपातकालीन कार्य है तो परिहारों के साथ करें, तो कार्य निर्विघ्न, शुभ और मंगलमय होगा।

क्रम संख्या	नक्षत्रों के नाम	दोनो पक्षों की तिथियां		शुभ और अशुभ योग		योगों के नाम		निषेध कार्य
1	अश्विनी							
2	भरणी							
3	कृत्तिका							
4	रोहिणी							
5	मृगशिरा							
6	आर्द्रा							
7	पुनर्वसु	13		शुभ		सुधा		
8	पुष्य	13	9	शुभ	अशुभ	सुधा	मधुसर्पिश	

9	अश्लेषा				
10	मघा				
11	पूर्वाफाल्गुनी				
12	उत्तराफाल्गुनी				
13	हस्त				
14	चित्रा				
15	स्वाती				
16	विशाखा				
17	अनुराधा	13	अशुभ	हलाहल	
18	ज्येष्ठा				
19	मूला				
20	पूर्वाषाढ़ा				
21	उत्तराषाढ़ा				
22	अभिजित				
23	श्रवण				
24	धनिष्ठा				
25	शतभिषा				
26	पूर्वा भाद्रपद				
27	उत्तरा भाद्रपद				

28	रेवती	13	शुभ	सुधा	

शुक्रवार के दिन एक विशेष **नक्षत्र** और एक विशेष **तिथि** के सहयोग से बनने वाले तात्कालिक शुभ और अशुभ योग निम्न प्रकार से हैं। यदि संभव हो तो अशुभ योगों और निषेध कार्य को प्रयोग में न लाएं, और यदि आपातकालीन कार्य है तो परिहारों के साथ करें, तो कार्य निर्विघ्न, शुभ और मंगलमय होगा।

क्रम संख्या	नक्षत्रों के नाम	दोनो पक्षों की तिथियां	शुभ और अशुभ योग	योगों के नाम	निषेध कार्य
1	अश्विनी				
2	भरणी				
3	कृत्तिका				
4	रोहिणी				
5	मृगशिरा				
6	आर्द्रा				
7	पुनर्वसु				
8	पुष्य				
9	अश्लेषा				
10	मघा				
11	पूर्वाफाल्गुनी				
12	उत्तराफाल्गुनी	1,6,11	शुभ	सुधा	

13	हस्त				
14	चित्रा				
15	स्वाती	1,6,11	शुभ	सुधा	
16	विशाखा				
17	अनुराधा				
18	ज्येष्ठा				
19	मूला				
20	पूर्वाषाढ़ा				
21	उत्तराषाढ़ा				
22	अभिजित				
23	श्रवण	6	अशुभ	हलाहल	
24	धनिष्ठा				
25	शतभिषा	1,6,11	शुभ	सुधा	
26	पूर्वा भाद्रपद				
27	उत्तरा भाद्रपद				
28	रेवती	10	अशुभ	मधुसर्पिश	

शनिवार के दिन एक विशेष **नक्षत्र** और एक विशेष **तिथि** के सहयोग से बनने वाले तात्कालिक शुभ और अशुभ योग निम्न प्रकार से हैं। यदि संभव हो तो अशुभ योगों और निषेध कार्य को प्रयोग में न लाएं, और यदि आपातकालीन कार्य है तो परिहारों के साथ करें, तो कार्य निर्विघ्न, शुभ और मंगलमय होगा।

क्रम संख्या	नक्षत्रों के नाम	दोनो पक्षों की तिथियां		शुभ और अशुभ योग		योगों के नाम		निषेध कार्य
1	अश्विनी							
2	भरणी							
3	कृत्तिका	2,7,12		शुभ		त्रिपुष्कर		
4	रोहिणी	2,7,12	11	शुभ	अशुभ	सुधा	मधुसर्पिश	
5	मृगशिरा	2,7,12		शुभ		द्विपुष्कर		
6	आर्द्रा							
7	पुनर्वसु	2,7,12		शुभ		त्रिपुष्कर		
8	पुष्य							
9	अश्लेषा							
10	मघा							
11	पूर्वाफाल्गुनी							
12	उत्तराफाल्गुनी	2,7,12		शुभ		त्रिपुष्कर		
13	हस्त							
14	चित्रा	2,7,12		शुभ		द्विपुष्कर		
15	स्वाती	2,7,12		शुभ		सुधा		
16	विशाखा	2,7,12		शुभ		त्रिपुष्कर		
17	अनुराधा							

18	ज्येष्ठा				
19	मूला				
20	पूर्वाषाढ़ा				
21	उत्तराषाढ़ा	2,7,12	शुभ	त्रिपुष्कर	
22	अभिजित				
23	श्रवण				
24	धनिष्ठा	2,7,12	शुभ	सुधा, द्विपुष्कर	
25	शतभिषा				
26	पूर्वा भाद्रपद	2,7,12	शुभ	त्रिपुष्कर	
27	उत्तरा भाद्रपद				
28	रेवती	8	अशुभ	हलाहल	

योग

मुहूर्त को प्रभावित करने वाले नैसर्गिक योग और उनकी साधारण जानकारी शुभ-अशुभ और त्याज्य समय के आधार पर निम्न प्रकार से है।

क्रम संख्या	योगों के नाम	योगों के स्वामी	शुभ और अशुभ	आरंभिक त्याज्य घटियां (मिनट)
1	विष्कुम्भ	यम	अशुभ	3 घटी (72 मिनट)

2	प्रीति	चन्द्रमा	शुभ	
3	आयुष्मान	विष्णु	शुभ	
4	सौभाग्य	ब्रह्मा	शुभ	
5	शोभन	बृहस्पति	शुभ	
6	अतिगण्ड़	चन्द्रमा	अशुभ	6 घटी (144 मिनट)
7	सुकर्मा	इन्द्र	शुभ	
8	घृति	जल	शुभ	
9	शूल	सर्प	अशुभ	5 घटी (120 मिनट)
10	गण्ड़	अग्नि	अशुभ	6 घटी (144 मिनट)
11	वृद्धि	सूर्य	शुभ	
12	ध्रुव	भूमि	शुभ	
13	व्याघात	वायु	अशुभ	9 घटी (216 मिनट)
14	हर्षण	भग	शुभ	
15	वज्र	वरूण	अशुभ	3 घटी (72 मिनट)
16	सिद्धि	गणेश	शुभ	
17	व्यतीपात	रूद्र	अशुभ	पूर्ण अशुभ
18	वरीयान	कुबेर	शुभ	
19	परिघ	विश्वकर्मा	अशुभ	आधा भाग
20	शिव	मित्र	शुभ	
21	सिद्धि	कार्तिकेय	शुभ	
22	साध्य	सावित्री	शुभ	

23	शुभ	लक्ष्मी	शुभ	
24	शुक्ल	लक्ष्मी	शुभ	
25	ब्रह्म	अश्विनी कुमार	शुभ	
26	इन्द्र	पितर	शुभ	
27	वैधृति	दिति	अशुभ	पूर्ण अशुभ

शुद्ध योगः- वे योग जो एक ही सूर्योदय को छू पाते हैं, शुद्ध योग कहलाते हैं।

क्षय योगः- वे योग जो एक भी सूर्योदय को नही छू पाते हैं, क्षय योग कहलाते हैं।

वृद्धि योगः- वे योग जो दो सूर्योदय को छू पाते हैं। वृद्धियोग कहलाते हैं।

आवश्यक कार्य है और अनुकूल योग न मिल रहा हो तो स्वर्ण दान करके कार्य किया जा सकता है।

करण

एक तिथि के आधे भाग को एक करण कहते हैं यानि एक तिथि में दो करण होते हैं। एक चन्द्रमास में सात चर संज्ञक करण (बव, बालव, कौलव, तैतिल, गर, वणिज और विष्टि) आठ बार अपने आपको दुहराते हैं, जिससे इनकी संख्या 56 हो जाती है, जबकि चार स्थिर संज्ञक करण (शकुनि, चतुष्पाद, नाग और किंस्तुधन) एक ही बार आते हैं। इस तरह एक चन्द्रमास में कुल 60 करण हो जाते हैं। जिनमे चर करणों में विष्टि को छोड़कर (**जो भद्रा के नाम से प्रसिद्ध है**) लगभग शुभ है और स्थिर चारों करण (पितृ कार्यों को छोड़कर) लगभग अशुभ हैं।

सभी 60 करण, तिथियों के अनुसार एक चन्द्रमास (कृष्ण पक्ष और शुक्ल पक्ष) में निम्न प्रकार से आते हैं।

कृष्ण पक्ष

तिथि का पूर्वार्ध (प्रथम भाग)				तिथि का उत्तरार्ध (द्वितीय भाग)		
तिथियां	करण	स्वामी	शुभ-अशुभ	करण	स्वामी	शुभ-अशुभ
1	बालव	ब्रह्मा	शुभ	कौलव	मित्र	शुभ
2	तैतिल	विश्वकर्मा	शुभ	गर	भूमि	शुभ
3	वणिज	लक्ष्मी	शुभ	**विष्टि**	**यम**	**अशुभ**
4	बव	इन्द्र	शुभ	बलव	ब्रह्मा	शुभ
5	कौलव	मित्र	शुभ	तैतिल	विश्वकर्मा	शुभ
6	गर	भूमि	शुभ	वणिज	लक्ष्मी	शुभ
7	**विष्टि**	**यम**	**अशुभ**	बव	इन्द्र	शुभ
8	बालव	ब्रह्मा	शुभ	कौलव	मित्र	शुभ
9	तैतिल	विश्वकर्मा	शुभ	गर	भूमि	शुभ
10	वणिज	लक्ष्मी	शुभ	**विष्टि**	**यम**	**अशुभ**
11	बव	इन्द्र	शुभ	बलव	ब्रह्मा	शुभ
12	कौलव	मित्र	शुभ	तैतिल	विश्वकर्मा	शुभ
13	गर	भूमि	शुभ	वणिज	लक्ष्मी	शुभ
14	**विष्टि**	**यम**	**अशुभ**	**शकुनि**	**कलि**	**अशुभ**

अमावस्या	चतुष्पाद	रूद्र	अशुभ	नाग	सर्प	अशुभ

शुक्ल पक्ष

	तिथि का पूर्वार्ध (प्रथम भाग)			तिथि का उत्तरार्ध (द्वितीय भाग)		
तिथियां	करण	स्वामी	शुभ-अशुभ	करण	स्वामी	शुभ-अशुभ
1	किंस्तुधन	मरूत	अशुभ	बव	इन्द्र	शुभ
2	बालव	ब्रह्मा	शुभ	कौलव	मित्र	शुभ
3	तैतिल	विश्वकर्मा	शुभ	गर	भूमि	शुभ
4	वणिज	लक्ष्मी	शुभ	विष्टि	यम	अशुभ
5	बव	इन्द्र	शुभ	बलव	ब्रह्मा	शुभ
6	कौलव	मित्र	शुभ	तैतिल	विश्वकर्मा	शुभ
7	गर	भूमि	शुभ	वणिज	लक्ष्मी	शुभ
8	विष्टि	यम	अशुभ	बव	इन्द्र	शुभ
9	बालव	ब्रह्मा	शुभ	कौलव	मित्र	शुभ
10	तैतिल	विश्वकर्मा	शुभ	गर	भूमि	शुभ
11	वणिज	लक्ष्मी	शुभ	विष्टि	यम	अशुभ
12	बव	इन्द्र	शुभ	बलव	ब्रह्मा	शुभ
13	कौलव	मित्र	शुभ	तैतिल	विश्वकर्मा	शुभ

14	गर	भूमि	शुभ	वणिज	लक्ष्मी	शुभ
पूर्णिमा	**विष्टि**	**यम**	**अशुभ**	बव	इन्द्र	शुभ

मुहूर्त को निकालते समय यदि भद्रा (विष्टि करण) पर विचार नही किया गया, तो भद्रा कार्य की असफलता के अनुपात को प्रभावित कर सकता है, क्योंकि भद्रा का विघ्नकारक प्रभाव कार्य को प्रभावित करता है। भद्रा का बुरा असर पृथ्वी पर तभी पड़ता है जब चन्द्रमा का गोचर 4,5,11 और 12वीं राशि में हो अन्यथा नही, क्योंकि यदि जब चन्द्रमा का गोचर 6,7,9 और 10वीं राशि में हो तो भद्रा का वास पाताल लोक में, और यदि चन्द्रमा का गोचर 1,2,3 और 8वीं राशि में हो तो भद्रा का वास स्वर्ग लोक में होता है।

यदि संभव हो तो भद्रा जिस दिशा में हो उस दिशा की यात्रा न करें। भद्रा की दिशा तिथियों (दोनो पक्षों की) पर निर्भर करती है।

दोनो पक्षों की तिथियां	**3**	**4**	**7**	**8**	**10**	**11**	**14**	**15**
भद्रा की दिशा	ईशान N/E	पश्चिम W	दक्षिण S	आग्नेय S/E	वायव्य N/W	उत्तर N	पूर्व E	नैऋत्य S/W

शुक्ल पक्ष की भद्रा को सर्पिणी (मुख में विष) और कृष्ण पक्ष की भद्रा को वृश्चिकी (पूंछ में विष) कहा जाता है। शुक्ल पक्ष में दिन की भद्रा सर्पिणी और रात में वृश्चिकी होती है जबकि कृष्ण पक्ष में दिन की भद्रा वृश्चिकी और रात की भद्रा सर्पिणी होती है। यहां पर सर्पिणी का अर्थ है मुख में विष और वृश्चिकी का अर्थ है पूंछ में विष, इसलिए कार्य अति आवश्यक हो तो भद्रा के बीच में करना चाहिए। भद्रा लगभग 12 घण्टे की होती है। शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा और अष्टमी व कृष्ण पक्ष

की सप्तमी और चतुर्दशी तिथि के पूर्वार्ध (पहला आधा भाग) में भद्रा होती है जबकि शुक्ल पक्ष की चतुर्थी और एकादशी व कृष्णपक्ष की तृतीया और दशमी तिथि के उत्तरार्ध (अन्तिम आधा भाग) में भद्रा होती है। इसलिए कार्य यदि अति आवश्यक हो तो परिहार (भगवान शिव की पूजा आदि) के बाद भद्रा के मध्य में किया जा सकता है, **लेकिन शुक्ल पक्ष की भद्रा का आंरभिक समय और कृष्ण पक्ष की भद्रा का अंतिम समय विशेष रूप से त्यागना चाहिए।** यज्ञोपवीत, नवीन गृह आंरभ या प्रवेश, यात्रा और मांगलिक कार्य आदि भद्रा में न करें, जबकि भद्रा में दुर्गा पूजा की जा सकती है।

आवश्यक कार्य हो और विष्टि (भद्रा) करण भूलोक की हो तो अन्न (धान्य) दान करके कार्य किया जा सकता है।